

[2023] 16 एस. सी. आर 613:2023 आई. एन. एस. सी 1007

मुकदमों का विवरण

विवेक कायस्थ और एक अन्य

बनाम

हिमाचल प्रदेश राज्य और अन्य

(2023 की सिविल अपील संख्या 6233-6234)

20 नवंबर, 2023

[सी. टी. रविकुमार और सुधांशु धूलिया, जे. जे.]

हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: इसमें दो अपीलार्थियों के नाम बाद में राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना 27.12.2013 के माध्यम से अंतिम चयन सूची में शामिल किए गए थे। उच्च न्यायालय ने इन दोनों चयनों को अवैध माना है और इसके परिणामस्वरूप नियुक्तियों को रद्द कर दिया गया है। इस न्यायालय को सिविल न्यायाधीश (कनिष्ठ प्रभाग) के पद पर इन दो अपीलार्थियों के चयन और नियुक्ति की वैधता की जांच करनी है, और क्या उन्हें अब उनके न्यायिक कार्यालय से हटा दिया जाना चाहिए।

सेवा कानून-भर्ती- विज्ञापन-01.02.2013 पर एक विज्ञापन जारी किया गया था जिसमें राज्य आयोग ने हिमाचल प्रदेश न्यायिक सेवा में सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद के लिए आठ रिक्तियों के खिलाफ आवेदन आमंत्रित किए थे-परीक्षा के बाद, अंतिम सूची घोषित की गई थी-इसमें दो अपीलकर्ताओं के नाम बाद में शामिल किए गए थे- उच्च न्यायालय ने इन चयनों को अवैध माना - स्वामित्व:

आयोजित किया गया: कानून की स्थिति के अनुसार, एक बार स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों का विज्ञापन हो जाने के बाद, इन रिक्तियों पर ही नियुक्तियां की जा सकती हैं- जिन रिक्तियों का विज्ञापन की तारीख से पहले अनुमान नहीं लगाया जा सकता था, या जो रिक्तियां विज्ञापन के समय मौजूद नहीं थीं, वे भविष्य के लिए रिक्तियां हैं यानी अगली चयन प्रक्रिया-तत्काल मामले में, यह स्पष्ट है कि अपीलार्थियों की नियुक्ति उन पदों पर की गई थी जो विज्ञापन नहीं किए गए थे और वास्तव में उस समय भी मौजूद नहीं थे जब विज्ञापन दिया गया था-इन दोनों उम्मीदवारों के चयन/नियुक्ति में की गई विसंगति काफी स्पष्ट है- इन रिक्तियों के निष्कर्ष

उच्च न्यायालय सही था- हालाँकि, उच्च न्यायालय ने मामले के संदर्भ, तथ्यों और परिस्थितियों को याद किया- दोनों अपीलकर्ताओं ने पहले ही लगभग 10 वर्षों तक न्यायिक अधिकारियों के रूप में कार्य किया है- इस बीच, उन्हें सिविल न्यायाधीश (वरिष्ठ प्रभाग) के अगले उच्च पद पर भी पदोन्नत किया गया है- उनके चयन और नियुक्ति की इस प्रक्रिया में, इस न्यायालय के ध्यान में ऐसा कुछ भी नहीं लाया गया जो इन नियुक्तियों को सुरक्षित आदेश में इन दो अपीलार्थियों के आचरण के बारे में किसी भी पक्षपात, भाई-भतीजावाद या तथाकथित दोष का सुझाव दे सकता है- उच्च न्यायालय ने कभी इसका जवाब नहीं दिया कि "अवैध" चयन और नियुक्ति का यह दोष उच्च न्यायालय (उसके प्रशासनिक पक्ष पर) पर कितना होगा- हालाँकि निस्संदेह चयन प्राधिकरण के रूप में आयोग को अंततः इसका खामियाजा भुगतना होगा। लेकिन दोष सरकार व उच्च न्यायालय को बराबरी में समान रूप से साझा किया जाना चाहिए। न्यायालय अधिकारी के पास 10 वर्षों का अच्छा अनुभव है इसलिये उन्हें निकालना जनहित में नहीं होगा। अपीलकर्ता को नियुक्ति एक प्रक्रिया के तहत दी, जिसमें उन्होंने लिखित परीक्षा पास की और साक्षात्कार में उत्तीर्ण रहे और मैरिट लिस्ट में शामिल हुए। इसलिए उपरोक्त कारणों से, अनुच्छेद 142 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए माननीय उच्च न्यायालय के आदेश को उस हद तक खारिज करते हैं जहां तक यह अपीलार्थियों के चयन और नियुक्ति को रद्द करता है [पैरा 28,29,31,32,36,37]

उद्धरण और अन्य संदर्भों की सूची

शिवानंदन सी. टी. और अन्य बनाम केरल उच्च न्यायालय अन्य अन्य। (2023) एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 994-पर निर्भर था।

श्वेता ढींगरा अन्य बनाम स्टेट ऑफ एच. पी. और अन्य। (2011) एस. सी. सी. ऑनलाइन एच. पी. 3566; मलिक मजहर सुल्तान और एक अन्य बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग और अन्य (2008) 17 एस. सी. सी. 703; मलिक मजहर सुल्तान और एक अन्य बनाम उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग और अन्य (2009) 17 एस. सी. सी. 24; केरल उच्च न्यायालय अन्य रेशमा ए. और अन्य (2021) 1 एस. सी. आर. 289;(2021) 3 एस. सी. सी. 755; गुजरात राज्य डी. एक्जीक्यूटिव इंजीनियर्स एसोसिएशन। v. गुजरात राज्य (1994) पूरक 2 एस. सी. सी. 591; होशियार सिंह बनाम हरियाणा राज्य (1993) पूरक/4 एस. सी. सी. 377; बिहार राज्य बनाम सचिवालय सहायक/सफल परीक्षक संघ

[1993] 3 पूरक/एससीआर 134:(1994) 1 एस. सी. सी. 126; बिहार राज्य अन्य मदन मोहन सिंह (1994) पूरक 3 एस. सी. सी. 308; सुरिंदर सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य और अन्य। [1997] 3 पूरक। एससीआर 538:(1997) 8 एससीसी 488; राखी रे और अन्य बनाम दिल्ली उच्च न्यायालय और अन्य। [2010] 2 एससीआर 239:(2010) 2 एस. सी. सी. 637-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

दीवानी अपीलीय क्षेत्राधिकार 2023 की सिविल अपील न. 6233-6234।

सी. डब्ल्यू. पी. न. 3319 और 2014 के 4498 शिमला में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के दिनांकित 20.09.2021 के निर्णय और आदेश से।

के साथ

सिविल अपील न. 6236,6235 और 20023 का 6237

उपस्थिति :

परमजीत सिंह पटवालिया, हरिन पी. रावल, पी. वी. सुरेंद्रनाथ, वरिष्ठ अधिवक्ता।, अमित कुमार सिंह, सुश्री के एनाटोली सेमा, सुश्री चुबलेमला चांग, प्रांग न्यूमाई, बीजू पी रमन, गौरवजीत सिंह पटवालिया, अमित वर्मा, सुश्री स्वाति सूद, दीपांशु कृष्णन, अंशुमन, सुश्री दामिनी चावला, विश्वनाथन अय्यर, आनंद शर्मा, अरमान शर्मा, सुश्री ज्योति मेहरा, सुश्री पूजा शर्मा, संदीप जिंदल, डी. के. ठाकुर, राजीव कुमार गुप्ता, तवलीन सिंह, जोगिंदर मान, सुश्री निहारिका, द्वयांश ठाकुर, बिमलेश कुमार सिंह, कंवल चौधरी, चित्रांशुल ए. सिन्हा, सुश्री राधिका गौतम, सुश्री श्रेष्ठ नारायण, सुश्री श्रेया बंसल।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय/आदेश

निर्णय

न्यायाधीश सुधांशु धूलिया, जे

1. इस न्यायालय के समक्ष अपीलकर्ताओं ने दिनांकित निर्णय दिनांक 20.09.2021 को चुनौती दी है जो हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ द्वारा पारित किया सिविल अपील क्रमशः न. 6233/6234/2023 विवेक कायस्थ और आकांक्षा डोगरा), जिसके द्वारा सिविल न्यायाधीश (जूनियर डिवीजन) के पद पर अपीलार्थियों की नियुक्ति को रद्द कर दिया गया है।

वर्तमान में हमारे सामने चार अपीलें हैं। अन्य तीन अपीलें अपीलार्थियों (संबंधित अपीलों में) की हैं, जो हिमाचल प्रदेश राज्य में वर्ष 2013 के लिए सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद के लिए भी उम्मीदवार थे, और उन्होंने चयन प्रक्रिया के साथ-साथ वर्तमान अपीलार्थियों की नियुक्ति को भी चुनौती दी है, हालांकि अलग-अलग कारणों से। हम इन अपीलों को एक सामान्य आदेश द्वारा निपटाने का प्रस्ताव करते हैं। फिर भी, जब हम वर्तमान मामले में तथ्यों का उल्लेख करते हैं, तो हमारा संदर्भ 2023 की सिविल अपील न. 6233 और 2023 की सिविल अपील No.6234 में निहित तथ्यों तक ही सीमित रहेगा।

2. 1 फरवरी, 2013 को एक विज्ञापन जारी किया गया था जिसमें हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग (जिसे इसके बाद "राज्य आयोग" के रूप में संदर्भित किया गया है) ने हिमाचल प्रदेश न्यायिक सेवा में सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद के लिए आठ रिक्तियों के लिए योग्य उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए थे। कुल आठ रिक्तियों में से छह "मौजूदा रिक्तियां" थीं और दो "प्रत्याशित रिक्तियां" थीं। इन पदों के लिए प्रारंभिक परीक्षा 12.05.2013 पर आयोजित की गई थी, जिसके परिणाम 15.06.2013 पर घोषित किए गए थे। प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले उम्मीदवारों ने मुख्य लिखित परीक्षा में भाग लिया जो 15 जुलाई, 2013 से 18 जुलाई, 2013 के बीच आयोजित की गई थी। अस्सी उम्मीदवारों ने लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण किया और अंततः उन्हें साक्षात्कार के लिए बुलाया गया, जो 07 और 08 अक्टूबर, 2013 को आयोजित किया गया था। अंत में, निम्नलिखित उम्मीदवारों का चयन किया गया और सूची आयोग की वेबसाइट पर और समाचार पत्र में 08.10.2013 पर प्रकाशित की गई। यह निम्नानुसार है:

क्रमांक सं०	रोल नं.	उम्मीदवार का नाम	श्रेणी
कट रिक्तियों को साफ़ करें			
1.	1025	सुश्री अंशु चौधरी	सामान्य
2.	2006	श्री निशांत वर्मा	एससी। जाति
3.	1670	सुश्री प्रतिभा नेगी	एससी। जनजाति
4.	2185	सुश्री अनीता शर्मा	एससी। जनजाति
5	2172	श्री बालजीत	ओ. बी. सी.
6.	1431	श्री जितेंद्र कुमार	ओ. बी. सी.
अपेक्षित रिक्तियां			

1.	1126	सुश्री आभा चौहान	सामान्य
2.	1319	श्री अजय कुमार	सामान्य

3. इस न्यायालय के समक्ष दो अपीलार्थियों के नाम उपरोक्त सूची में नहीं थे और उनके नाम बाद में राज्य सरकार द्वारा जारी अधिसूचना 27.12.2013 के माध्यम से शामिल किए गए थे। हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने इन दोनों चयनों को अवैध ठहराया है और इन नियुक्तियों को रद्द कर दिया गया है। ये दोनों अपीलार्थी अब उच्च न्यायालय के दिनांकित 20.09.2021 के फैसले को चुनौती देने के लिए हमारे सामने हैं। हमें सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद पर इन दो अपीलार्थियों के चयन और नियुक्ति की वैधता की जांच करनी होगी, और क्या उन्हें अब उनके न्यायिक कार्यालय से हटा दिया जाना चाहिए।

4. 08.10.2013 को आठ रिक्तियों के परिणाम के प्रकाशन के बाद, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, स्पष्ट रूप से राज्य सरकार के स्तर पर एक अभ्यास किया गया था, जिसमें हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के महापंजीयक से सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के संवर्ग में राज्य न्यायिक सेवा में मौजूदा रिक्तियों की सही स्थिति के बारे में जानकारी मांगी गई थी। यह 19.10.2013 दिनांकित पत्र इस प्रकार है:-

“न. होम-बी (बी) 6-4/2006-VI-6

हिमाचल प्रदेश सरकार

गृह विभाग

से:

हिमाचल प्रदेश सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव

(गृह) शिमला-171001

तारीख: 19 अक्टूबर, 2013

उप: मलिक मजहर सुल्तान के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिनांक 04.01.2007 के निर्देशों के आलोक में सिविल न्यायाधीश (जूनियर डिवीजन) के पदों के लिए सिफारिश

श्रीमान्

मुझे ऊपर उद्धृत विषय का उल्लेख करने और एच. पी. लोक सेवा आयोग के सचिव

से 11 अक्टूबर, 2013 को प्राप्त पत्र संख्या 3-50/2012-पी. एस. सी. (ई.-आई.) की एक प्रति संलग्न करने का निर्देश दिया गया है। सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में नियुक्ति के लिए 8 उम्मीदवारों (स्पष्ट कट के खिलाफ 06 और प्रत्याशित रिक्तियों के खिलाफ 02) को इस विभाग में भेजा गया है। इस संबंध में आगे बढ़ने से पहले, आपसे अनुरोध है कि प्रशासनिक पक्ष से, कृपया सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के संवर्ग में सभी मौजूदा रिक्तियों का श्रेणीवार विवरण जल्द से जल्द इस विभाग को भेजें।

भवदीय ,

घेराव: जैसा कि ऊपर बताया गया है

[देविंदर सरस्वती]

हिमाचल प्रदेश सरकार के उप सचिव (गृह)

फोन नंबर 0177-2626450 "

5. अपने जवाब में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के महापंजीयक ने हिमाचल प्रदेश सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) को संबोधित अपने दिनांकित पत्र के माध्यम से लिखा:-

“.....

आपके पत्र के संदर्भ में नं. मुख पृष्ठ-बी (बी) 6/2006-VI-6-74 दिनांक 19.10.2013, शीर्षक वाले विषय पर, मुझे आपको यह सूचित करने का निर्देश दिया गया है कि सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के संवर्ग में मौजूदा रिक्ति की स्थिति निम्नानुसार है:-

क्रमांक सं०	श्रेणी	सूची बिंदु	रिक्तियों की संख्या
1	यू आर	42, 29, 30, 55, 56 और 11	6
2	एससी	54	1
3	एसटी	14 & 39	2
4	ओ. बी. सी.	33 & 42	2

यह सूचित किया जाता है कि सूची बिंदु संख्या 55,56,11 को पंजीकरण द्वारा 2013 के दौरान अधिसूचित किए जाने वाले पदों की मांग में शामिल नहीं किया गया था क्योंकि सिविल न्यायाधीशों (जूनियर) के दो नए पदों के निर्माण के कारण यह पद 18.04.2013 पर खाली हो गया था। डिवीजन) सोलन और अम्ब में और एक पद श्री सुनीश अग्रवाल, सिविल जज (जूनियर डिवीजन)-सह-जे. एम. आई. सी., ए. एम. एम. आई. की सेवा से छुट्टी के कारण 19.09.2013 पर।”

6. इस बीच 2013 की चल रही प्रक्रिया में न्यायिक अधिकारियों के चयन और उन रिक्तियों की संख्या पर चर्चा करने के लिए राज्य स्तर पर 21.10.2013 को एक बैठक आयोजित की गई, जिन पर इस तरह का चयन किया जा सकता है। 21.10.2013 को आयोजित इस बैठक में निम्नलिखित अधिकारियों ने भाग लिया:-

1. श्री ए. सी. डोगरा, महापंजीयक, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय
2. श्री संदीप भटनागर, आईएएस, सचिव, हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग
3. श्री देविंदर सरस्वती, हिमाचल प्रदेश सरकार के उप सचिव (गृह)

7. जैसा कि हम देख सकते हैं, उक्त बैठक में हिमाचल प्रदेश सरकार, राज्य लोक सेवा आयोग और हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा नामित अधिकारी उपस्थित थे। यह समिति (हम इसे केवल सुविधा के लिए समिति के रूप में संदर्भित करेंगे), नोट करती

है कि पहले केवल 8 उम्मीदवारों को चयन सूची में शामिल किया गया था, हालांकि हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देश को ध्यान में रखते हुए कुछ अन्य उम्मीदवारों को शामिल किया जाना चाहिए था। श्वेता ढींगरा बनाम एच् पी राज्य और अन्य (2011) एस. सी. सी. ऑनलाइन एच. पी. 3566। इसके बाद इसने सिफारिश की कि आकांक्षा डोगरा और विवेक कायस्थ जो सामान्य श्रेणी के उम्मीदवारों की योग्यता सूची में हैं और मीनाक्षी और परवेज जो क्रमशः अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति श्रेणी में हैं, उन्हें भी चयन सूची में शामिल किया जाना चाहिए।

8. तर्क यह था कि केवल मौजूदा और प्रत्याशित रिक्तियों के लिए सिफारिशों की गई हैं, जबकि इसे अतिरिक्त पदों के लिए किया जाना चाहिए था, जो श्वेता ढींगरा (उपरोक्त) में निर्देशित वास्तविक और प्रत्याशित रिक्तियों का दो तिहाई होगा। 21.10.2013 दिनांकित बैठक के कार्यवृत्त को नीचे पढ़ा गया है:

“सी. डब्ल्यू. पी. सं. 3135/2011¹ द्वारा निर्णय की सामग्री का अध्ययन किया गया जिसद्वारा यह निर्देश दिया गया है कि एच. पी. लोक सेवा आयोग वर्ष 2010 से उम्मीदवारों की एक संशोधित चयन सूची प्रकाशित करेगा। वास्तविक और प्रत्याशित रिक्तियों के दो तिहाई को शामिल करके योग्यता सूची। यह भी निर्देश दिया गया कि माननीय उच्च न्यायालय, हिमाचल प्रदेश सरकार और हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग संयुक्त रूप से योग्यता सूची के प्रकाशन के तुरंत बाद चयन सूची तैयार करने की कवायद शुरू करेंगे और यह कवायद प्रत्येक वर्ष योग्यता सूची के प्रकाशन के दो सप्ताह के भीतर पूरी की जाएगी।

2. सरकार (गृह विभाग में) ने सिविल जज (जूनियर) के 08 रिक्त पदों को भरने के लिए एक अनुरोध भेजा है। प्रभाग) 2013 के लिए। रिक्तियों का श्रेणी-वार विभाजन इस प्रकार है:-

खाली 06 (सामान्य-1, अनुसूचित जाति-1, अनुसूचित जनजाति-2 और अन्य पिछड़ा वर्ग-2)

अपेक्षित रिक्तियां:- 02 (जनरल)

1 श्वेता ढींगरा बनाम हिमाचल प्रदेश राज्य [(2011) SCC ऑनलाइन HP 3566] दिनांक 03.09.2011

3. उपर्युक्त रिक्तियों को भरने के लिए एच. पी. न्यायिक सेवा परीक्षा, 2013 की भर्ती प्रक्रिया पूरी होने पर, एच. पी. लोक सेवा आयोग ने परिणाम तैयार किया और आयोग की वेबसाइट और 08.10.2013 के समाचार पत्रों पर योग्यता सूची प्रकाशित की। एच. पी. लोक सेवा आयोग ने योग्यता सूची के प्रकाशन पर एच. पी. सरकार को निम्नलिखित उम्मीदवारों की सिफारिश की:-

क्रमांक सं०	रोल नं.	उम्मीदवार का नाम	श्रेणी
क्लियर कट रिक्तियों के खिलाफ			
1	1025	सुश्री अंशु चौधरी	सामान्य
2	2006	श्री निशांत वर्मा	एससी। जाति
3	1678	सुश्री प्रतिभा नेगी	एससी। जनजाति
4	2185	सुश्री अनीता शर्मा	एससी। जनजाति
5	2172	श्री बालजीत	ओ. बी. सी.
6	1431	श्री जितेंद्र कुमार	ओ. बी. सी.
प्रत्याशित रिक्तियों के विरुद्ध			
1	1126	सुश्री आभा चौहान	सामान्य
2	1319	श्री अजय कुमार	सामान्य

एच. पी. जे. एस. परीक्षा, 2013 के परिणाम पर समिति द्वारा गौर किया गया और माननीय उच्च न्यायालय के निर्देशों को ध्यान में रखा गया। एच. पी. का न्यायालय वास्तविक और प्रत्याशित रिक्तियों में से दो तिहाई को शामिल करके चयन सूची तैयार करेगा, सुश्री आकांक्षा डोगरा, रोल नंबर 20969, श्री. विवेक कैस्थ, सामान्य श्रेणी के रोल नंबर 1299 उम्मीदवार, सुश्री मीनाक्षी, रोल नंबर 1386 (एस. एच. जाति श्रेणी) और श्री. परवेज, रोल No.1139 (श. जनजाति श्रेणी) को चयन सूची में रखा जा सकता है क्योंकि ओ. बी. सी. श्रेणी के किसी अन्य उम्मीदवार ने एच. पी. जे. एस. परीक्षा-2013 उत्तीर्ण नहीं की थी। तदनुसार, सुश्री आकांक्षा डोगरा, रोल नंबर 2099, श्री के नाम शामिल करने का निर्णय लिया गया। विवेक कायस्थ, सामान्य श्रेणी के रोल नंबर 1299 उम्मीदवार, सुश्री मीनाक्षी, रोल No.1386 (एससी। जाति श्रेणी) और श्री. परवेज, रोल नंबर 1139 (एससी। जनजाति श्रेणी) चयन सूची में उम्मीदवार और आयोग को तदनुसार चयन सूची प्रकाशित करनी चाहिए।”

9. श्वेता ढींगरा (उपरोक्त) मामले में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ वर्ष 2010 के लिए राज्य में सिविल न्यायाधीश (कनिष्ठ प्रभाग) के चयन पर विचार कर रही थी और यह राय थी कि स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों के अलावा, आयोग को कुछ

अतिरिक्त उम्मीदवारों की एक चुनिंदा सूची तैयार करनी चाहिए। इसलिए कुछ और न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति के लिए यह पूरी कवायद वर्तमान मामले में इस विश्वास के साथ की गई थी कि **श्वेता ढींगरा** (ऊपर) में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देशों के संदर्भ में यही किया जाना चाहिए था, और इसलिए हमें उस *मामले में* दिए गए निर्देशों को दोहराना चाहिए। हम एक उचित परिप्रेक्ष्य प्राप्त आदेश के लिए इस क्रम के अधिकांश भाग को पुनः प्रस्तुत करते हैं:

2. मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम उत्तर प्रदेश सेवा आयोग मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद पर सीधी भर्ती के संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए हैं। रिक्तियों को हर साल 15 जनवरी तक अधिसूचित किया जाना है। रिक्तियों में सेवानिवृत्ति और भविष्य की रिक्तियों के कारण मौजूदा रिक्तियां शामिल हैं और जो पदोन्नति, मृत्यु या अन्यथा के कारण उत्पन्न हो सकती हैं। फैसले में यह भी कहा गया है कि चयन सूची तब तक काम करेगी जब तक कि अगले वर्ष के लिए चयन सूची लागू नहीं हो जाती। इसके अलावा, यह आदेश जाता है कि चयन सूची योग्यता के क्रम में प्रकाशित की जानी चाहिए और अधिसूचित रिक्तियों से दोगुनी होनी चाहिए। इस निर्देश को बाद में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 24 मार्च, 2009 के आदेश द्वारा संशोधित किया गया था - प्रभाव कि चयन सूची में रिक्तियों की मौजूदा संख्या और अगले वर्ष के लिए प्रत्याशित रिक्तियां होनी चाहिए और प्रतीक्षा सूची में कुछ उम्मीदवारों को शामिल किया जाना चाहिए। दुर्भाग्य से, लोक सेवा आयोग द्वारा प्रकाशित चयन सूची केवल पांच और तीन प्रत्याशित रिक्तियों के लिए थी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उक्त सूची योग्यता के आदेश में है। जहां तक तत्काल मामलों के तथ्यों का संबंध है, सांप्रदायिक आवर्तन के पहलू पर चयन सूची के संबंध में कोई विवाद नहीं है, ताकि हमें इस स्तर पर उस पहलू में जाने की आवश्यकता न पड़े, हम इसे भविष्य के दिशानिर्देशों के लिए बाद में इस निर्णय में संदर्भित कर सकते हैं।

3.

4. वर्ष 2011 के लिए भर्ती के लिए कदम पहले ही शुरू किए जा चुके हैं। हम पाते हैं कि छह स्पष्ट रिक्तियों (2-एससी, 2-एसटी और 2-ओबीसी) को अधिसूचित किया गया है। छह अनुमानित हैं (2-सामान्य, 1-एसटी और 3-ओबीसी)। लोक सेवा आयोग द्वारा अक्टूबर, 2011 के अंत तक चयन सूची प्रकाशित किए जाने की

उम्मीद है। इसलिए, पहले से तैयार की गई/विधिवत तैयार की जाने वाली चयन सूची को 2011 की चयन सूची प्रकाशित होने तक काम करना है। उच्च न्यायालय को 15 अक्टूबर, 2011 तक सभी उपलब्ध रिक्तियों के बारे में आयोग और सरकार को 17 अक्टूबर, 2011 को या उससे पहले सूचित करने का निर्देश दिया जाएगा। उन रिक्तियों को भरने के लिए आयोग और सरकार द्वारा 2010 की चयन सूची से कदम उठाए जाएंगे और नियुक्तियां 29 अक्टूबर, 2011 से पहले की जाएंगी।

5. यह सूचित किया जाता है कि सरकार द्वारा पहले से ही 2008-09 में जारी किए गए निर्देशों को देखते हुए चयन सूची स्पष्ट रिक्तियों और प्रत्याशित रिक्तियों की वास्तविक संख्या तक सीमित थी। हम पाते हैं कि सरकार ने अनावश्यक (अनावश्यक) मुकदमेबाजी से बचने के लिए इस तरह के आदेश जारी किए थे। ध्यान दें इसलिए, लोक सेवा आयोग को वास्तविक और प्रत्याशित रिक्तियों के दो तिहाई को शामिल करके वर्ष 2010 की योग्यता सूची से उम्मीदवारों की संशोधित चयन सूची प्रकाशित करने का निर्देश दिया जाएगा।

6. चयन सूची और योग्यता सूची दो अवधारणाएँ हैं। योग्यता सूची यह है कि परीक्षा-सह-साक्षात्कार में उनके अंकों के अनुसार रैंक किए गए उम्मीदवारों की सूची। चयन सूची वह है जो सांप्रदायिक सूची के अनुसार तैयार की जाती है।

7. 2009 के सी. डब्ल्यू. पी. सं. 3828 में इस न्यायालय के फैसले के अनुसार, जिसका शीर्षक है कीकट बनाम एच. पी. राज्य, अब रोस्टर को उच्च न्यायालय द्वारा बनाए रखा जाना है। इससे पहले इसका रखरखाव सरकार द्वारा किया जाता था। चूँकि चयन सूची लोक सेवा आयोग द्वारा प्रकाशित की जानी है, इसलिए उच्च न्यायालय, सरकार और लोक सेवा आयोग को निर्देश दिया जाएगा कि वे योग्यता सूची के प्रकाशन के तुरंत बाद चयन सूची तैयार करने की इस कवायद को संयुक्त रूप से शुरू करें और यह कवायद प्रत्येक वर्ष योग्यता सूची के प्रकाशन के दो सप्ताह के भीतर पूरी की जाएगी। इसके बाद लोक सेवा आयोग चयन सूची प्रकाशित करेगा। एक बार चयन सूची प्रकाशित होने के बाद, नियुक्ति योग्यता-सह-सांप्रदायिक आवर्तन के आधार पर तैयार की गई उक्त सूची के अनुसार सख्ती से की जाएगी।”

10. उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ द्वारा पैराग्राफ 5 और 7 में दिए गए निर्देश महत्वपूर्ण हैं। पहला निर्देश अतिरिक्त रिक्तियों के बारे में है, जो वास्तविक और प्रत्याशित रिक्तियों का दो तिहाई होना था और दूसरा निर्देश इन रिक्तियों को निर्धारित करने और

भरने में राज्य आयोग, राज्य सरकार और उच्च न्यायालय द्वारा की जाने वाली संयुक्त कवायद थी। यह भी बताता है कि तीन सदस्यीय समिति द्वारा 21.10.2013 पर संयुक्त अभ्यास क्यों किया गया था, जिसका उल्लेख हम पहले ही पिछले पैराग्राफ में कर चुके हैं।

11. हालांकि जो बात स्पष्ट नहीं है, वह यह है कि स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों के अलावा आगे की रिक्तियों यानी स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों के दो तिहाई को क्यों प्रकाशित किया जाना था। अगर वह प्रतीक्षा सूची होती तो चयन समाप्त होने के बाद ऐसा निर्देश नहीं दिया जा सकता था। किसी भी मामले में, चयन समाप्त होने और परिणाम घोषित होने के बाद, चयन वर्ष 2013 के लिए नई रिक्तियों को चुनने की कोई तात्कालिकता नहीं थी।

12. जो भी हो, वर्तमान मामले में, संयुक्त बैठक और उसमें लिए गए निर्णय के परिणामस्वरूप, अपर मुख्य सचिव (गृह) ने अपने दिनांकित 25.11.2013 के पत्र के माध्यम से लोक सेवा आयोग के सचिव को निम्नानुसार लिखा:-

“

मुझे ऊपर उद्धृत विषय पर 11 अक्टूबर, 2013 के पत्र संख्या 3-50/2012-PSC (E-1) का उल्लेख करने और यह कहने का निर्देश दिया गया है कि इस विभाग के अनुसार सिविल जज (जूनियर) के 8 (आठ) पदों की मांग की गई है। आयोग द्वारा प्रभाग)-सह-जे. एम. आई. सी. की सिफारिश की गई है। इस बीच, सोलन और अम्ब (ऊना) में सिविल कोर्ट के लिए (जूनियर डिवीजन)-सह-जे. एम. आई. सी. के 2 (दो) अतिरिक्त पद बनाए गए हैं।

इसके अलावा, एक सिविल जज-(जूनियर डिवीजन)-सह-जे. एम. आई. सी., अमित को 19.09.2013 पर सरकारी सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। विभाग में (जूनियर डिवीजन) के तीन और पद उपलब्ध हो गए हैं। उनके पत्र के अनुसार नं. एच. एच. सी./जी. ए. जेड./14-49/74-वी. आई.-30012 दिनांक 30 अक्टूबर, 2013 (फोटोकॉपी तैयार संदर्भ के लिए संलग्न) महापंजीयक, एच. पी. उच्च न्यायालय ने सूचित किया है कि रोस्टर बिंदु 55,56 और 11 को वर्ष 2013 के दौरान माननीय उच्च न्यायालय की पंजीकरण द्वारा अधिसूचित किए जाने वाले पदों की पिछली मांग में शामिल नहीं किया गया था।

उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए आपसे अनुरोध किया जाता है कि आप

जल्द से जल्द अनारक्षित श्रेणी से रोस्टर बिंदु 55,56 और 11 के खिलाफ चयन सूची से तीन और उम्मीदवारों को प्रायोजित करें।”

13. अंततः, हालांकि, सामान्य श्रेणी से केवल दो नाम जो योग्यता के क्रम में अगले थे, चयन सूची के लिए उपलब्ध कराए गए थे जो विवेक कैस्त और आकांक्षा डोगरा (इस न्यायालय के समक्ष अपीलकर्ता) के थे, जिनकी राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा सिविल न्यायाधीश (जूनियर डिवीजन) के रूप में आदेश के लिए सिफारिश की गई थी। इसके बाद अपीलार्थियों को 27.12.2013 पर नियुक्ति पत्र जारी किए गए और उन्हें सामान्य श्रेणी के तहत सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में नियुक्त किया गया। फिर दोनों पीलार्थियों को न्यायिक अकादमी में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने बाद में उन्हें विभिन्न जिलों में सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में नियुक्त किया। परिवीक्षा की अपनी अवधि पूरी करने और सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में लगभग 9 साल की सेवा पूरी करने के बाद, दोनों अपीलार्थियों को सिविल जज (सीनियर डिवीजन) के अगले उच्च पद पर भी पदोन्नत किया गया है, जो 23.03.2023 पर किया गया था।

14. पहला सवाल जो हमारे दिमाग में आता है वह यह है कि क्या **श्वेता ढींगरा** (उपरोक्त) मामले में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्देश **मलिक मजहर सुल्तान (3) और एक अन्य बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग और अन्य (2008) 17 एस. सी. सी. 703** मामले में इस अदालत के फैसले के अनुरूप थे (इसके बाद "मलिक मजहर" के रूप में संदर्भित)। हम थोड़ी देर में इस पर चर्चा करेंगे, लेकिन चूंकि इस सब के मूल में मलिक मजहर में इस अदालत द्वारा दिए गए आदेश निहित हैं, इसलिए इस स्तर पर मामले का स्पष्ट परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय को संदर्भित करना आवश्यक होगा।

मलिक मजहर में इस न्यायालय द्वारा दिए गए निर्देशों का मुख्य उद्देश्य राज्यों में न्यायिक रिक्तियों को समय पर भरना था। इस न्यायालय ने प्रत्येक उच्च न्यायालय द्वारा पालन करने के लिए एक समय अवधि निर्धारित की थी ताकि मौजूदा न्यायिक रिक्तियों को बिना किसी देरी के भरा जा सके। राज्यों में न्यायिक सेवाएं सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के कैडर से शुरू होती हैं, जिन्हें न्यायिक मजिस्ट्रेट भी कहा जाता है, जब वे आपराधिक पक्ष पर काम करते हैं। मलिक मजहर में, यह निर्देश दिया गया था कि सिविल जज (जूनियर डिवीजन) की सभी "रिक्तियों" को उस वर्ष की 15 जनवरी तक अधिसूचित

किया जाएगा। रिक्तियां इस प्रकार होनी थीं:-

“क) मौजूदा रिक्तियां।

(ख) भविष्य में रिक्तियां जो सेवानिवृत्ति के कारण एक वर्ष के भीतर उत्पन्न हो सकती हैं।

(ग) भविष्य में पदोन्नति, मृत्यु या अन्य कारणों से रिक्तियां हो सकती हैं, जो पदों की संख्या का दस प्रतिशत है।”

तीसरी श्रेणी जो “भविष्य की रिक्तियां” थी, जो सेवानिवृत्ति के अलावा अन्य कारणों से आ सकती हैं, कैडर की संख्या का 10 प्रतिशत होना था, जैसा कि फैसले में स्पष्ट किया गया था।

हम आगे निर्देश देते हैं कि दस प्रतिशत अप्रत्याशित रिक्तियां स्वीकृत पदों के संबंध में होंगी न कि किसी विशेष वर्ष में होने वाली रिक्तियों के संबंध में।”

फिर आवेदन प्राप्त करने, प्रारंभिक परीक्षा आयोजित करने, मुख्य परीक्षा और परिणामों की शीघ्र घोषणा करने और 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर के बीच आयोजित होने वाली मौखिक परीक्षा के लिए एक समय सीमा थी। 1 नवंबर तक परिणाम घोषित किए जाने थे और नियुक्ति पत्र जारी किए जाने थे। नवीनतम 2 जनवरी तक, पदधारी को पद में शामिल होना चाहिए।

15. मलिक मजहर मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इन नियुक्तियों के लिए निम्नलिखित समय सारिणी तैयार की गई थी:

“सीधी भर्ती द्वारा सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद पर नियुक्ति के लिए

एस. नं.	वर्णन	तिथि
1	उच्च न्यायालय द्वारा अधिसूचित रिक्तियों की संख्या। गणना की जाने वाली रिक्तियों में शामिल हैं - (a) मौजूदा रिक्तियां। (b) भविष्य में रिक्तियां जो सेवानिवृत्ति के कारण एक वर्ष के भीतर उत्पन्न हो सकती हैं (c) भविष्य में रिक्तियां जो पदोन्नति के कारण उत्पन्न हो सकती हैं,	15 जनवरी

	मृत्यु या अन्यथा, पदों की संख्या का दस प्रतिशत कहें।	
2	पात्रों से आवेदन आमंत्रित करने का विज्ञापन उम्मीदवार।	1 फरवरी
3	आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि	1 मार्च
4	योग्य आवेदकों की सूची का प्रकाशन। सूची वेबसाइट पर रखी जा सकती है।	2 अप्रैल
5	पात्र आवेदकों को प्रवेश पत्र भेजना/जारी करना।	2 से 30 अप्रैल
6	प्रारंभिक लिखित परीक्षा बहु विकल्प वाले वस्तुनिष्ठ प्रश्न जिनकी कंप्यूटर द्वारा जांच की जा सकती है।	15 मई
7	प्रारंभिक लिखित परीक्षा के परिणाम की घोषणा (a) परिणाम वेबसाइट पर डाला जा सकता है और समाचार पत्र में भी प्रकाशित किया जा सकता है। (b) 1 का अनुपात:10 सफल उम्मीदवारों के लिए उपलब्ध रिक्तियों को बनाए रखा जाए	15 जून
8	अंतिम लिखित परीक्षा विषयगत/कथात्मक।	15 जुलाई
9	अंतिम लिखित परीक्षा के परिणाम की घोषणा (a) परिणाम वेबसाइट पर डाला जा सकता है और समाचार पत्र में भी प्रकाशित किया जा सकता है। (b) 1 का अनुपात:3 सफल उम्मीदवारों के लिए उपलब्ध रिक्तियों को बनाए रखा जाए। (c) सफल उम्मीदवारों के साक्षात्कार की तिथियों को इंटरनेट पर डाला जा सकता है जिससे	30 अगस्त

	उम्मीदवारों द्वारा मुद्रित किया जा सकता है और कोई अलग सूचना नहीं दी जा सकती है। साक्षात्कार की तिथि भेजी जानी चाहिए।	
10	वाइवा वॉयस।	1 से 15 अक्टूबर
11	अंतिम चयन सूची की घोषणा और नियुक्ति प्राधिकारी को संचार (a) परिणाम वेबसाइट पर डाला जा सकता है और समाचार पत्र में भी प्रकाशित किया जा सकता है। (b) चयन सूची योग्यता के क्रम में प्रकाशित की जानी आदेश और अधिसूचित रिक्तियों की संख्या से दोगुनी होनी आदेश।	1 नवंबर
12	आज की तारीख में सभी मौजूदा रिक्त पदों के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियुक्ति पत्र जारी करना।	1 दिसंबर
13	शामिल होने की अंतिम तिथि।	2 जनवरी आने वाले साल में ।

16. न्यायालय ने प्रत्येक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से चयन प्रक्रिया की निगरानी के लिए दो या तीन न्यायाधीशों की एक समिति गठित करने का अनुरोध किया ताकि न्यायिक अधिकारियों का समय पर चयन किया जा सके। अन्य दिशाएँ भी थीं। हालाँकि, कठिनाई यह पता लगाने में थी कि विज्ञापन किए जाने वाले रिक्तियों की संख्या कितनी है। जहाँ तक (ए) मौजूदा रिक्तियों और (ख) सेवानिवृत्ति के कारण एक वर्ष के भीतर आने वाली भविष्य की रिक्तियों का संबंध था, इन रिक्तियों का अनुमान लगाने में कोई कठिनाई नहीं थी। यह तीसरी श्रेणी है जिसे "सी" में "भविष्य की रिक्तियों" के रूप में दिया गया था, जिसने विभिन्न राज्यों में कुछ भ्रम पैदा किया क्योंकि इन रिक्तियों के बारे में कोई स्पष्टता नहीं थी कि ये रिक्तियाँ क्या होंगी या उनकी

गणना कैसे की जाएगी। अंततः, **मलिक मजहर सुल्तान और एक अन्य बनाम उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग और अन्य (2009) 17 एस. सी. सी. 24** (जिसे इसके बाद "मलिक मजहर-2" के रूप में संदर्भित किया गया है) मामले में इस न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने अपने दिनांक 24.03.2009 के आदेश में इस पहलू को स्पष्ट किया:

"1. 4-1-2007 [**मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703:(2010) 1 एस. सी. सी. (एल एंड एस) 942**], यह न्यायालय ने विभिन्न न्यायालयों में अधीनस्थ न्यायिक अधिकारियों के सदस्यों के चयन और नियुक्ति के संबंध में कुछ निर्देश दिए थे। सारणीबद्ध रूप में, रिक्तियों की संख्या के द्वारा अधिसूचित किया जाता है उच्च न्यायालय लोक सेवा आयोग। यह निर्देश दिया गया कि पदोन्नति या मृत्यु या अन्यथा के कारण उत्पन्न होने वाली अतिरिक्त रिक्तियों में से 10 प्रतिशत पदों को अधिसूचित किया जाएगा और इसे आदेश के पैरा 15 में संदर्भित किया गया है; यह आगे कहा गया है: (**मलिक मजहर मामला [मलिक मजहर सुल्तान] (3) बनाम उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703:(2010) 1 एस. सी. सी. (एल एंड एस) 942**], एस. सी. सी. पी. 711)

"15. हम आगे निर्देश देते हैं कि दस प्रतिशत अप्रत्याशित रिक्तियां स्वीकृत पदों के संबंध में होंगी न कि किसी विशेष वर्ष में होने वाली रिक्तियों के संबंध में।"

2. विभिन्न उच्च न्यायालयों की ओर से पेश वकील ने बताया कि कुछ राज्यों में 10 प्रतिशत स्वीकृत पदों को अधिसूचित किया गया है। बड़ी संख्या में पदों को अधिसूचित किया जाना है, जबकि चयन सूची में उम्मीदवारों का चयन होने पर इसी संख्या में रिक्तियों को भरा जाना था। ऐसे उम्मीदवारों से नियुक्ति मिलने की उम्मीद की जा सकती है और इससे उम्मीदवारों द्वारा अवांछित मुकदमेबाजी पैदा होती है और यह प्रार्थना की जाती है कि अगले एक वर्ष में उत्पन्न होने वाली प्रत्याशित रिक्तियों के साथ अकेले मौजूदा रिक्तियों को अधिसूचित किया जाए और कुछ उम्मीदवारों को उच्च न्यायालयों/पी. एस. सी. द्वारा तैयार प्रतीक्षा सूची में भी शामिल किया जाए।

3. **मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703 पर इस न्यायालय द्वारा पारित आदेश के अधिक्रमण**

में (2010) 1 एस. सी. सी. (एल. एंड एस.) 942], यह न्यायालय निर्देश देता है कि भविष्य में उच्च न्यायालय/पी. एस. सी. रिक्तियों की मौजूदा संख्या और अगले एक वर्ष के लिए प्रत्याशित रिक्तियों को अधिसूचित करेंगे और कुछ उम्मीदवारों को प्रतीक्षा सूची में भी शामिल किया जाएगा। इस हद तक पहले के आदेश को संशोधित किया गया है।”

(जोर दिया गया)

17. दूसरे शब्दों में, मलिक मजहर-2 में इस अदालत की तीन न्यायाधीशों की पीठ द्वारा स्पष्टीकरण के बाद, मलिक मजहर में पहले बनाई गई तीसरी श्रेणी अब मौजूद नहीं थी। इसलिए, हमारी राय में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ द्वारा श्वेता ढोंगरा (ऊपर) में दिए गए निर्देश आवश्यक नहीं थे, और वर्तमान मामले में तीन सदस्यीय समिति द्वारा इन निर्देशों पर भरोसा करना गलत था क्योंकि 'रिक्तियों' का विज्ञापन पहले ही किया जा चुका था। अगर ऐसा है तो आवश्यक था कि इस तरह की कवायद 01.02.2013 पर रिक्तियों का विज्ञापन दिए जाने से पहले की जानी चाहिए थी।

18. हम यहाँ हिमाचल प्रदेश के 2004 के नियमों का भी उल्लेख कर सकते हैं जिन्हें हिमाचल प्रदेश न्यायिक सेवा नियम, 2004 के रूप में जाना जाता है। मलिक मजहर में इस न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप लाने के लिए नियमों में संशोधन किया गया था। संशोधन के बाद, हिमाचल प्रदेश न्यायिक सेवा नियमों के अनुसार अधिसूचित की जाने वाली रिक्तियों की संख्या इस प्रकार थी:

(a) मौजूदा रिक्तियां;

(b) भविष्य में रिक्तियां जो सेवानिवृत्ति के कारण एक वर्ष के भीतर उत्पन्न हो सकती हैं; और

(c) भविष्य में रिक्तियां जो पदोन्नति, मृत्यु या अन्यथा के कारण उत्पन्न हो सकती हैं, पदों की संख्या का दस प्रतिशत कहते हैं।

मलिक मजहर-2 में अधिसूचित की जाने वाली रिक्तियों की संख्या के बारे में इस न्यायालय द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण पर उपरोक्त नियमों में बदलाव करते समय शायद

ध्यान नहीं दिया गया था। इस प्रकार, 2004 के नियमों में दी गई रिक्तियां मलिक

मजहर-2 के संदर्भ में इस न्यायालय द्वारा 'रिक्तियों' के रूप में परिभाषित की गई रिक्तियों के अनुरूप नहीं हैं। किसी भी मामले में यदि मौजूदा और प्रत्याशित रिक्तियों के अलावा और अधिक रिक्तियों का विज्ञापन दिया जाना था, तो यह विज्ञापन से पहले ही किया जा सकता था, यानी 1 फरवरी, 2013.

19. फिर भी, भले ही सेवा नियम जो सुझाव देते हैं और मलिक मजहर में इस न्यायालय द्वारा जो अनिवार्य हैं, उसके बीच एक स्पष्ट द्वंद्व है, इसे सेवा नियमों और भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 के बीच एक सामंजस्यपूर्ण व्याख्या करके हल किया जाना चाहिए, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा **केरल उच्च न्यायालय बनाम रेशमा ए और अन्य (2021) 3 एससीसी 755** में अभिनिर्धारित किया गया है। सेवा नियमों के महत्व को कम नहीं किया जा सकता है। मलिक मजहर में दिए गए निर्देशों में भी इस बात पर जोर दिया गया है कि नियुक्तियां प्रत्येक राज्य के सेवा नियमों के अनुसार की जानी चाहिए, क्योंकि चयन और नियुक्ति की प्रक्रिया विभिन्न राज्यों के बीच भिन्न हो सकती है। यह न्यायालय इस पहलू से अवगत था। इस न्यायालय की चिंता न्यायिक रिक्तियों को भरने के लिए समय पर भर्ती के लिए थी। मलिक मजहर और सेवा नियमों के निर्देशों के बीच टकराव पर किसी भी संदेह को दूर करते हुए, इस न्यायालय ने **रेशमा ए. (ऊपर)** में निम्नानुसार समझाया:

“59..... निर्णय में इस न्यायालय का उद्देश्य और उद्देश्य मलिक मजहर (3) [मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703] में राज्य न्यायिक सेवाओं में न्यायिक रिक्तियों को तेजी से भरना सुनिश्चित करना था। इसी परिप्रेक्ष्य में न्यायालय ने अनुपालन के लिए सख्त समय-सीमा निर्धारित की। साथ ही, यह स्पष्ट है कि निर्णय में पात्रता, परीक्षा आयोजित करने के तौर-तरीके और राज्य न्यायिक सेवाओं में नियुक्तियां करने में आरक्षण के आवेदन जैसे आवश्यक पहलुओं का प्रावधान नहीं था। इसलिए, न्यायिक सेवाओं में चयन और नियुक्तियों की प्रक्रिया के संबंध में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र मलिक मजहर (3) [मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703] में निर्णय द्वारा कवर नहीं किया गया है, जिसके लिए किसी को राज्य न्यायिक सेवा को नियंत्रित करने वाले नियमों का अर्थ लगाने से पीछे हटना पड़ता है।”

मलिक मजहर में, इस न्यायालय ने राज्य आयोगों के स्वतंत्र कामकाज में हस्तक्षेप पर कर्तव्यों के किसी भी संभावित टकराव से निपटा था, जहां उसने न्यायिक रिक्तियों को

समय पर भरने के अपने एकमात्र उद्देश्य को दोहराया था। इसमें कहा गया है:

“6. यद्यपि किसी भी राज्य सरकार की ओर से उपस्थित किसी भी विद्वान अधिवक्ता द्वारा यह प्रस्तुत नहीं किया गया था कि अधीनस्थ/जिला स्तर पर न्यायाधीशों की समय पर नियुक्ति की निगरानी के लिए उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा चयन समिति का गठन राज्य लोक सेवा आयोग के स्वतंत्र कामकाज में हस्तक्षेप के बराबर होगा, लेकिन कुछ राज्य सरकारों ने अपने जवाबों में ऐसा संकेत दिया है। राज्यों में संबंधित न्यायिक सेवा नियमों के अनुसार की जाने वाली नियुक्तियों के बारे में हमने पहले ही जो नोट किया है, उसे देखते हुए हस्तक्षेप की आशंका पूरी तरह से गलत प्रतीत होती है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि रिक्तियों को समय पर भरा जाए और न्याय के वितरण में देरी की समस्या से कुछ हद तक निपटा जाए, उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश द्वारा गठित समिति को किसी भी परिस्थिति में नियमों के तहत अधिकारियों के स्वतंत्र कामकाज या राज्य लोक सेवा आयोग के स्वतंत्र कामकाज में हस्तक्षेप नहीं कहा जा सकता है।”

20. **रेशमा ए. (ऊपर)** में एक ऐसी स्थिति से निपटने के दौरान जहां केरल न्यायिक सेवा नियमों और मलिक मजहर में दिए गए निर्देशों के बीच लगभग समान द्विभाजन था, इस न्यायालय की राय थी कि ऐसे मामलों में, दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करना बेहतर होता है और यह माना जाता है कि *“एक बेहतर दृष्टिकोण एक ऐसी व्याख्या की तलाश करना है जो उनके बीच सामंजस्य लाए।”* रेशमा ए. (उपरोक्त) मामले के **विवरण में** गए बिना, वहाँ जो समस्या उत्पन्न हुई वह यह थी कि केरल में सेवा नियमों के अनुसार “योग्यता सूची” को “संभावित रिक्तियों” की संख्या से “दोगुना” होना आवश्यक था। सूची के पहले आधे उम्मीदवारों को अधिसूचित रिक्तियों पर नियुक्तियाँ दिए जाने के बाद, सूची के शेष उम्मीदवारों, यानी लगभग आधे, ने रिक्तियों पर नियुक्ति का दावा किया जो बाद में आई, यानी रिक्तियों की अधिसूचना के बाद। इन उम्मीदवारों का दावा सेवा नियम [नियम 7(2)]² के एक प्रावधान पर आधारित था जिसमें निर्धारित किया गया था कि सूची “एक वर्ष” के लिए वैध होगी, और इसलिए चूंकि योग्यता सूची अभी

²नियम 7 (2) “उच्च न्यायालय द्वारा तैयार की गई योग्यता सूची को राज्यपाल की मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। राज्यपाल द्वारा अनुमोदित सूची अनुमोदन की तारीख से लागू होगी और अधिसूचित रिक्तियों और सूची के अनुमोदन की तारीख से एक वर्ष के भीतर उत्पन्न होने वाली रिक्तियों को भरने या एक नई सूची लागू होने तक मान्य होगी, जो भी पहले हो।”

भी एक वैध सूची थी, इसलिए इन रिक्तियों पर नियुक्तियां की जा सकती थीं, केरल उच्च न्यायालय के समक्ष याचिकाकर्ताओं का मामला था। उनके दावे को विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा रिट याचिका के साथ-साथ खण्ड पीठ के समक्ष अपील में स्वीकार कर लिया गया था। केरल उच्च न्यायालय इस प्रकार इस न्यायालय के समक्ष रेशमा ए (उपरोक्त) मामले में था। वास्तव में, नियम 7 के उप-नियम (2) की शाब्दिक व्याख्या उन याचिकाकर्ताओं को विचार करने का अधिकार देगी जो केरल उच्च न्यायालय के समक्ष थे, लेकिन यह सेवा न्यायशास्त्र के खिलाफ होगा क्योंकि यह उन रिक्तियों पर नियुक्तियां करने के बराबर होगा जो विज्ञापित नहीं की गई थीं, रिक्तियां जो अधिसूचित तिथि के बाद आई थीं, जिन पर ऐसे उम्मीदवारों के दावे को भी छोड़ दिया जाएगा जिन्होंने बाद में पात्रता प्राप्त की और जिन्हें विचार का अधिकार था। इसलिए, यह अभ्यास मुख्य रूप से भारत के संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 का उल्लंघन होगा। इस अदालत ने इस मुद्दे को इस तरह हल किया:

“ 71.1. निस्संदेह, उच्च न्यायालय के समक्ष नियम 7 (2) की वैधता पर कोई सवाल नहीं था। प्रतिवादी के वकील ने तर्क दिया कि यह अपीलकर्ता के प्रांत में अपने स्वयं के नियमों, विशेष रूप से नियम 7 (2) की वैधता के बारे में संदेह पैदा करने के लिए नहीं है। यह ध्यान दें आवश्यक है कि अपीलकर्ता की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता श्री वी. गिरि ने यह सुझाव या तर्क नहीं दिया कि नियम 7 (2) को लागू किया जाना चाहिए। अमान्य होना। विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता का निवेदन है कि "संभावित" अभिव्यक्ति एक जोड़/कटौती को दर्शाती है जो मृत्यु, त्यागपत्र और पदोन्नति जैसी सेवा की अभेद्यताओं के कारण की जानी है। अपीलकर्ता का निवेदन है कि नियम 7 (2) की शाब्दिक व्याख्या, अधिसूचित रिक्तियों से परे एक चुनिंदा सूची का संचालन नहीं करने की संवैधानिक आवश्यकता के संदर्भ के बिना, नियम को अनुच्छेद 14 और 16 का उल्लंघन करती है और ऐसी व्याख्या से बचा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उनका प्रतिवादी था कि मलिक मजहर सुल्तान (3) [मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी.

सी. 703:(2010) 1 एस. सी. सी. (एल. एंड. एस.) 942] का सहारा उच्च न्यायालय को लेना चाहिए था। हम प्रस्तुतियों की इस पंक्ति से सहमत हैं, क्योंकि यह इस न्यायालय की मिसाल पर आधारित है।

71.2 यह सेवा न्यायशास्त्र का एक स्थापित सिद्धांत है कि जब रिक्तियों को सार्वजनिक पदों पर नियुक्तियों के लिए चयन करने के लिए अधिसूचित किया जाता है, तो नियुक्तियों की संख्या उन रिक्तियों से अधिक नहीं हो सकती हैं जिन्हें अधिसूचित किया जाता है। प्रतिवादी द्वारा प्रस्तुत इस निवेदन का उत्तर यह है कि नियम 7 (1) के तहत रिक्तियों की संभावित संख्या को अधिसूचित करने की आवश्यकता है और चूंकि सटीक संख्या को अधिसूचित नहीं किया गया है, इसलिए 2019 में अधिसूचित 37 संभावित रिक्तियों से अधिक होने पर कोई संवैधानिक प्रतिबंध नहीं है। प्रस्तुतिकरण को स्वीकार करने में कठिनाई बस यह है: यह "रिक्तियों की संभावित संख्या" अभिव्यक्ति को एक ऐसा अर्थ बताता है जो सेवा न्यायशास्त्र के बुनियादी सिद्धांतों के साथ असंगत है, अनुच्छेद 14 और 16 के तहत सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता के जनादेश का पालन करने की आवश्यकता और अभिव्यक्ति के सामान्य अर्थ के विपरीत है। ब्लैक का कानून शब्दकोश [11 वीं संस्करण। (थॉमसन रॉयटर्स वेस्ट, 2019)] ब्लैक लॉ डिक्शनरी के चौथे संस्करण, संशोधन 6 (1971) में "संभावित" की परिभाषा थी: "सत्य का प्रकट होना; संभाव्यता का चरित्र होना; तर्क या अनुभव में स्थापित प्रतीत होना; खिलाफ की तुलना में अधिक सबूत होना; सबूत द्वारा समर्थित जो मन को विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन संदेह के लिए कुछ जगह छोड़ देता है; जाहिरा तौर पर सच है लेकिन संभवतः गलत है।"] "संभावित" अभिव्यक्ति को इस प्रकार परिभाषित करता है:

"संभावित: अस्तित्व में होने, सच होने या होने की संभावना "

रिक्तियों की संभावित संख्या, जैसा कि हमने देखा है, मौजूदा रिक्तियों और वर्ष के दौरान होने वाली रिक्तियों की गणना पर आधारित है। यह प्रतीक्षा सूची में कुछ उम्मीदवारों को शामिल करने की संभावना के लिए भी जिम्मेदार है। हालांकि, "संभावित" अभिव्यक्ति की व्याख्या उन रिक्तियों के अस्पष्ट मूल्यांकन के रूप में नहीं की जा सकती है जो कारण से स्थापित नहीं हैं और जिन्हें वैधानिक रूप से निर्धारित कारण के बिना बदला जा सकता है। नियम 7 (1) में रिक्तियों की संभावित संख्या की अवधारणा को आने वाले वर्ष में आने वाली भविष्य की रिक्तियों पर लगाम लगाने की अनुमति देने से एक गंभीर संवैधानिक

उल्लंघन होगा। भर्ती के बाद के वर्ष के दौरान भर्ती के लिए आवेदन करने के लिए पात्र होने वाले उम्मीदवारों को एक वास्तविक संवैधानिक शिकायत होगी कि जो रिक्तियां बाद के वर्ष के दौरान उत्पन्न हुई हैं, जिसके दौरान वे पात्र हो गए हैं, उन्हें पहले के भर्ती वर्ष के लिए आवंटित किया गया है। यदि उच्च न्यायालय के निर्देशों का पालन किया जाता है, तो यह प्रक्रिया की निष्पक्षता को गंभीर रूप से प्रभावित करेगा, जिसके बाद इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि 2020 के दौरान जो रिक्तियां पैदा हुई हैं, उन्हें वर्ष 2019 के लिए चयन सूची में उम्मीदवारों के लिए आवंटित किया जाएगा। इस तरह की कार्रवाई अनुच्छेद 14 और 16 का गंभीर उल्लंघन होगी और इससे बचा जाना चाहिए।

71.3 दोहराने के लिए, अपीलकर्ता का निवेदन जो हम प्रतिग्रहण करना करने के लिए इच्छुक हैं, वह यह नहीं है कि नियम 7 (2) अमान्य है, बल्कि यह है कि नियम 7 (1) और (2) की एक सामंजस्यपूर्ण व्याख्या को अपनाया जाना चाहिए जो मलिक मजहर सुल्तान (3) [मलिक मजहर सुल्तान (3) बनाम यू. पी. लोक सेवा आयोग, (2008) 17 एस. सी. सी. 703 के अनुच्छेद 142 के निर्देशों के अनुरूप है: (2010) 1 एस. सी. सी. (एल. एंड एस.) 942] सार्वजनिक रोजगार के मामलों में संवैधानिक न्यायशास्त्र के शासी सिद्धांतों के अनुसार नियम लाना।”

21. आपात स्थिति में या कुछ अप्रत्याशित कारणों से, लोक हित में या जब राज्य सरकार द्वारा इस संबंध में कोई नीतिगत निर्णय लिया जाता है, जैसा कि इस न्यायालय द्वारा गुजरात राज्य उप-न्यायालय में अभिनिर्धारित किया गया है, को छोड़कर, जिन रिक्तियों का विज्ञापन किया गया है, उनके अलावा नियुक्तियां नहीं की जा सकती हैं। *एग्जीक्यूटिव इंजीनियर्स एसोसिएशन बनाम गुजरात राज्य (1994) पूरक 2 एस. सी. सी. 591.*

22. होशियार सिंह बनाम हरियाणा राज्य (1993) सप.4 एस. सी. सी. 377 इस न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया था कि लोक सेवा आयोग सिफारिश नहीं कर सकता है विज्ञापित की गई रिक्तियों से अधिक नाम और विज्ञापित की गई रिक्तियों से अधिक की गई कोई भी नियुक्ति मनमाना होगी। कारण यह है कि इस तरह के चयन/नियुक्ति उन उम्मीदवारों को वंचित कर देगी जो इन पदों के विज्ञापन के समय नियुक्ति के लिए पात्र नहीं हैं, लेकिन बाद के वर्ष में पात्र हो गए थे, ऐसे पदों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने से वंचित हो जाएंगे। इस निर्णय का पालन इस न्यायालय द्वारा कई अन्य निर्णयों में किया

गया है। इनमें से कुछ निर्णयों का संदर्भ यहां दिया जा सकता है, जैसे कि **बिहार राज्य बनाम सचिवालय सहायक/सफल परीक्षक संघ (1994) 1 एस. सी. सी. 126 और बिहार राज्य बनाम मदन मोहन सिंह (1994) पूरक 3 एस. सी. सी. 308।**

23. उपरोक्त सभी निर्णयों में जो सामान्य सूत्र चलता है, वह यह है कि जिन रिक्तियों का विज्ञापन किया गया था, यानी स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों के अलावा नियुक्तियां नहीं की जा सकती हैं, भले ही लोक सेवा आयोग ने आवश्यकता से अधिक लंबी योग्यता सूची तैयार की हो।

24. मलिक मजहर-2 मामले में इस अदालत ने निर्देश दिया था कि उम्मीदवारों की प्रतीक्षा सूची भी तैयार की जानी चाहिए। जाहिर है कि वर्तमान चयन प्रक्रिया में कोई "प्रतीक्षा सूची" नहीं थी। एक होना चाहिए था। हालांकि, प्रतीक्षा सूची की अनुपस्थिति में ने कोई कठिनाई पैदा नहीं की है क्योंकि चुने गए सभी आठ उम्मीदवारों ने अपनी नियुक्ति दे दी थी और परिणामस्वरूप कार्य ग्रहण प्रतिवेदन दे दी थी। प्रतीक्षा सूची का उद्देश्य यह है कि जब चयनित उम्मीदवार किसी भी कारण से पद में शामिल नहीं हो पाते हैं, तो पद खाली नहीं रहना चाहिए और उम्मीदवारों की इस कमी को प्रतीक्षा सूची में शामिल उम्मीदवारों से पूरा किया जा सकता है। जो उम्मीदवार प्रतीक्षा सूची में हैं, उन्होंने भी हर मामले में परीक्षा उत्तीर्ण की है, लेकिन वे योग्यता में कम हैं और इस कारण से वे उम्मीदवारों की अंतिम चयन सूची में जगह नहीं बना सके। लेकिन उनके पास इसकी कमी है और इसलिए वे प्रतीक्षा सूची में हैं। "प्रतीक्षा सूची" का उद्देश्य केवल "स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों" की कमी को पूरा करना है।"

25. "प्रतीक्षा सूची" का गठन क्या है और इसका उद्देश्य क्या है, यह इस न्यायालय द्वारा गुजरात राज्य *डिप्टी एग्जीक्यूटिव इंजीनियर्स एसोसिएशन (ऊपर) में समझाया गया है।* इस प्रकार है:

"8. अगले अंक पर आते हुए, पहला सवाल यह है कि प्रतीक्षा सूची क्या है?; क्या इसे भर्ती के स्रोत के रूप में माना जा सकता है जिससे उम्मीदवारों को आवश्यकता पड़ने पर निकाला जा सकता है?; और अंत में यह कब तक हो सकता है काम करते हैं? ये कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जो उच्च न्यायालय द्वारा जारी निर्देश के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। सक्षम प्राधिकारी द्वारा सेवा मामलों में तैयार की गई प्रतीक्षा सूची योग्य और योग्य उम्मीदवारों की एक सूची है जिन्हें योग्यता के

आदेश में अंतिम चयनित उम्मीदवार से नीचे रखा जाता है। इसे कैसे संचालित किया जाना चाहिए और इसकी प्रकृति क्या है, यह नियमों द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। आमतौर पर यह उस चयन या परीक्षा से जुड़ा होता है जिसके लिए इसे तैयार किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि 1990 के लिए 10 उम्मीदवारों के चयन के लिए एक परीक्षा आयोजित की जाती है और सक्षम प्राधिकारी एक प्रतीक्षा सूची तैयार करता है तो यह केवल उन 10 सीटों के संबंध में है जिनके लिए चयन या प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसका कारण यह है कि जब भी चयन किया जाता है, सिवाय इसके कि यह एकल पद के लिए है, तो यह आम तौर पर न केवल विज्ञापन जारी होने या आवेदन आमंत्रित किए जाने की तारीख पर मौजूद रिक्तियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया जाता है, बल्कि उन रिक्तियों की संख्या को भी ध्यान में रखते हुए आयोजित किया जाता है जो भविष्य में एक या एक वर्ष के भीतर सेवानिवृत्ति आदि के कारण उत्पन्न होने की संभावना है। यही वह जगह है जहाँ आयोग द्वारा नियमित रूप से चयन किए जाते हैं। ऐसी सूचियाँ या तो नियमों के तहत या मुख्य रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए तैयार की जाती हैं कि यदि चयनित उम्मीदवार किसी न किसी कारण से शामिल नहीं होते हैं या अगला चयन या परीक्षा जल्द ही आयोजित नहीं की जाती है तो कार्यालय में काम करना प्रभावित न हो। योग्यता के क्रम में प्रतीक्षा सूची में एक उम्मीदवार को यह दावा आदेश का अधिकार है कि यदि एक या दूसरा चयनित उम्मीदवार शामिल नहीं होता है तो उसे नियुक्त किया जा सकता है। लेकिन एक बार जब चयनित उम्मीदवार शामिल हो जाते हैं और त्यागपत्र आदि के कारण या किसी अन्य कारण से कोई रिक्ति उत्पन्न नहीं होती है, तो नियमों के तहत या उचित अवधि के भीतर जहाँ कोई विशिष्ट अवधि प्रदान नहीं की जाती है, प्रतीक्षा सूची से उम्मीदवार को भविष्य में किसी भी रिक्ति के लिए नियुक्ति का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है, जो तब तक हो सकता है जब तक कि उसके लिए चयन नहीं किया गया था। ऊपर बताए गए सीमित सीमा के अलावा उसका कोई निहित अधिकार नहीं है, या जब नियुक्ति प्राधिकारी मनमाने ढंग से कार्य करता है और बाहरी कारणों से चुनकर प्रतीक्षा सूची से नियुक्ति करता है।

9. आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में तैयार की गई प्रतीक्षा सूची भर्ती का स्रोत प्रस्तुत नहीं करती है। यह केवल इस आकस्मिकता के लिए लागू है कि यदि

चयनित उम्मीदवारों में से कोई भी शामिल नहीं होता है तो प्रतीक्षा सूची से व्यक्ति को ऊपर धकेल दिया जा सकता है और इस तरह की रिक्ति में नियुक्त किया जा सकता है या यदि कुछ अत्यधिक आवश्यकता है तो सरकार नीतिगत निर्णय लेने के मामले में उठा सकती है। प्रतीक्षा सूची से योग्यता के आदेश में व्यक्ति। लेकिन उच्च न्यायालय द्वारा यह विचार कि चूंकि रिक्तियों का ठीक से निर्धारण नहीं किया गया है, इसलिए प्रतीक्षा सूची के उम्मीदवार नियुक्त किए जाने के लिए उत्तरदायी थे, सही नहीं प्रतीत होता है। इस प्रथा के परिणामस्वरूप उन उम्मीदवारों को वंचित किया जा सकता है जो भविष्य में उपलब्ध रिक्तियों के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए पात्र हो जाते हैं। यदि एक परीक्षा में प्रतीक्षा सूची नियुक्तियों के लिए एक अनंत भंडार के रूप में काम करती है, तो एक खतरा है कि राज्य सरकार वर्षों तक एक साथ परीक्षा आयोजित नहीं करने और आवश्यकता पड़ने पर प्रतीक्षा सूची से उम्मीदवारों को लेने के उपकरण का सहारा ले सकती है। संवैधानिक अनुशासन की आवश्यकता है कि इस न्यायालय को शक्ति के ऐसे अनुचित प्रयोग की अनुमति नहीं देनी चाहिए जिसके परिणामस्वरूप एक निहित स्वार्थ पैदा हो सकता है और खुले या यहां तक कि सेवा से नए उम्मीदवारों के पूरे समूह की कीमत पर एक परीक्षा के उम्मीदवारों के लिए प्रतीक्षा सूची बनाई जा सकती है।”

यह इस न्यायालय द्वारा सुरिंदर सिंह और अन्य बनाम पंजाब राज्य और एक अन्य (1997) 8 एससीसी 488: मामले में दोहराया गया था।

“प्रतीक्षा सूची में उम्मीदवारों को नियुक्त होने का कोई निहित अधिकार नहीं है, सिवाय इस सीमित सीमा के कि जब मौजूदा रिक्ति के खिलाफ चुना गया उम्मीदवार किसी कारण से शामिल नहीं होता है और प्रतीक्षा सूची अभी भी चालू होती है।”

26. राखी रे और अन्य बनाम दिल्ली उच्च न्यायालय अन्य । (2010) 2 एस. सी. सी. 637, में प्रतीक्षा सूची से भविष्य की रिक्तियों पर नियुक्तियां करने की प्रथा को गलत माना गया था। “यदि अधिसूचित रिक्तियां भरी जाती हैं, तो चयन प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। अधिसूचना/विज्ञापन जारी होने के बाद अस्तित्व में आने वाली रिक्तियों को भरने के लिए प्रतीक्षा सूची आदि का उपयोग जलाशय के रूप में नहीं किया जा सकता है। अप्रचलित चयन सूची/प्रतीक्षा सूची अर्थहीन हो जाती है और इसे सेवा में और नहीं दबाया

जा सकता है।³

27. हम "प्रतीक्षा सूची" पर कानून की स्थिति का उल्लेख कर रहे हैं क्योंकि हमारे सामने अपीलकर्ताओं (संबंधित अपीलों में) की दलीलों में से एक यह है कि चूंकि मलिक मजहर-2 में किसी भी मामले में "प्रतीक्षा सूची" रखने का निर्देश था, इसलिए उन दो अपीलार्थियों के नामों को "प्रतीक्षा सूची" से नाम के रूप में माना जाना चाहिए था। हमारी राय में, यह नहीं हो सकता है ऐसा किया गया, क्योंकि सवाल अभी भी बना रहेगा कि क्या उन रिक्तियों पर चयन/नियुक्ति की जा सकती है, जिनका कभी विज्ञापन नहीं किया गया था, इस तथ्य के अलावा कि यह किसी भी मामले में 'प्रतीक्षा सूची' की अवधारणा के खिलाफ जाएगा जिसे हमने ऊपर समझाया है। जिन रिक्तियों पर नियुक्तियां की गई हैं, उनका विज्ञापन के समय (1 फरवरी, 2013) अनुमान नहीं लगाया जा सका था, और इसलिए इन रिक्तियों का विज्ञापन नहीं किया गया था। ये दोनों रिक्तियां वास्तव में 18.03.2013 पर बनाई गई थीं, यानी 01.02.2013 पर रिक्तियों की अधिसूचना के बाद। ये "भविष्य की रिक्तियां" थीं, जो पहले मलिक मजहर में दी गई "सी" श्रेणी के तहत आ सकती थीं, लेकिन मलिक मजहर-2 में हटा दी गई थीं। तकनीकी रूप से इन रिक्तियों को केवल अगले वर्ष भरा जा सकता था और मलिक मजहर के निर्देशों के अनुसार 15 जनवरी, 2014 तक अधिसूचित किया जाना चाहिए था। अपीलार्थियों (संबंधित अपीलों में) का तर्क, विशेष रूप से वर्तमान अपीलार्थियों के खिलाफ, कि एक प्रतीक्षा सूची होती तो इन रिक्तियों के लिए उस श्रेणी में नियुक्ति के लिए उन पर विचार किया जा सकता था, हमारी राय में, "प्रतीक्षा सूची" की अवधारणा की पूरी तरह से गलतफहमी है।

28. कानून की स्थिति के अनुसार, एक बार स्पष्ट और प्रत्याशित रिक्तियों का विज्ञापन दिए जाने के बाद, इन रिक्तियों पर ही नियुक्तियां की जा सकती हैं। जिन रिक्तियों का विज्ञापन की तारीख से पहले अनुमान नहीं लगाया जा सका था, या जो रिक्तियां विज्ञापन के समय मौजूद नहीं थीं, वे भविष्य के लिए रिक्तियां हैं, यानी अगली चयन प्रक्रिया। मलिक मजहर सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद पर वार्षिक चयन/नियुक्ति को अनिवार्य करता है। एक समय सीमा तय की गई है, और 'रिक्तियों' की

घोषणा प्रत्येक वर्ष 15 जनवरी को की जानी है। प्रक्रिया को उसी वर्ष अक्टूबर तक पूरा करना होगा। एक बार जब इसका पालन किया जाता है, जैसा कि होना चाहिए, तो न्यायिक रिक्तियों को समय पर भरने का उद्देश्य (मलिक मजहर में दिए गए दिशानिर्देशों के तहत) प्राप्त किया जाता है।

29. हाथ में मामले में, यह स्पष्ट है कि अपीलार्थियों (विवेक कायस्थ और आकांक्षा डोगरा) की नियुक्ति उन पदों पर की गई थी जो विज्ञापित नहीं किए गए थे और वास्तव में उस समय भी मौजूद नहीं थे जब विज्ञापन किया गया था। इन दोनों उम्मीदवारों के चयन/नियुक्ति में हुई विसंगति काफी स्पष्ट है।

30. अपीलार्थियों की नियुक्ति को हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के समक्ष प्रतिवादी संख्या 4 द्वारा चुनौती दी गई थी। प्रतिवादी संख्या 4 (श्री कुलदिप शर्मा), जो उम्मीदवारों में से एक थे, योग्यता में अपीलार्थियों के साथ उम्मीदवारों की सूची, स्पष्ट रूप से इन दो रिक्तियों के अस्तित्व पर सवाल नहीं उठाती थी, बल्कि केवल यह कि इन रिक्तियों को प्रारंभिक 8 रिक्तियों के साथ विज्ञापित किया जाना चाहिए था। प्रारंभ में, सामान्य श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए केवल तीन पदों का विज्ञापन दिया गया था, जिसके खिलाफ 1 पर नियमों के अनुसार नौ उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था: 3 अनुपात और योग्यता के आदेश में कम होने के कारण उन्हें साक्षात्कार के लिए नहीं बुलाया गया था। उनका तर्क था कि अगर पांच पदों का विज्ञापन दिया जाता जैसा कि होना चाहिए था, तो पंद्रह उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता, जिसमें उन्हें शामिल किया जाता और इसलिए उनके पास चयन सूची में जगह बनाने का उचित मौका होता। उनके अनुसार, दो सीटों को शामिल करने का देर से लिया गया निर्णय उचित नहीं था। प्रतिवादी नं. 4, तथापि, हमारी राय में उनकी नियुक्ति के लिए कोई मामला नहीं था क्योंकि इन दो रिक्तियों का विज्ञापन पहले नहीं किया जा सकता था, क्योंकि ये रिक्तियां उस समय मौजूद नहीं थीं। इसी तरह, दो सीटों को शामिल करने के कारण आरक्षण आदि के उल्लंघन का दावा करते हुए उच्च न्यायालय के समक्ष एक और रिट याचिका भी दायर की गई थी। उनका मामला यह था कि दो अनुसूची जनजाति उम्मीदवारों का चयन सामान्य सीटों पर किया जाना चाहिए था, और उनके द्वारा खाली की गई दो सीटें आरक्षित उम्मीदवारों को दी जानी चाहिए थीं। इन अपीलार्थियों का पदों पर अपनी नियुक्तियों के लिए (संबंधित

अपीलों में) दावा फिर से इस तथ्य पर आधारित है कि इन दोनों रिक्तियों का विज्ञापन पहले किया जाना चाहिए था, यह फिर से गलत है। उच्च न्यायालय ने प्रतिवादी संख्या 4 द्वारा दायर रिट याचिका को इस हद तक स्वीकार कर लिया है कि यह अभिनिर्धारित करता है कि अपीलार्थियों की नियुक्ति कानून का उल्लंघन थी क्योंकि उन्हें मौजूदा रिक्तियों या प्रत्याशित रिक्तियों पर नियुक्त नहीं किया गया था, लेकिन उन्हें "भविष्य की रिक्तियों" पर नियुक्त किया गया था, जिनका कभी विज्ञापन नहीं किया गया था। यह सच है कि जिन रिक्तियों का विज्ञापन किया गया था, वे आरक्षित पदों सहित केवल 8 रिक्तियां थीं। हालाँकि, उच्च न्यायालय ने वर्तमान अपीलार्थियों या अन्य संबंधित याचिकाओं में अन्य उम्मीदवारों को कोई राहत नहीं दी। उनकी रिट याचिकाओं को खारिज कर दिया गया।

31. वर्तमान आदेश के पूर्ववर्ती पैराग्राफ में, हम पहले ही कानून की स्थिति को स्पष्ट कर चुके हैं और इसलिए, हमारी राय में, उच्च न्यायालय इस स्थिति को बनाए आदेश में सही था, जो कानून की तय स्थिति है। उच्च न्यायालय ने मामले के संदर्भ, तथ्यों और परिस्थितियों को नजरअंदाज कर दिया।

32. न्यायाधीश तथ्यों का न्यायाधीश होता है, जितना वह कानून का न्यायाधीश होता है। कानून की स्थिति हम पहले ही पिछले पैराग्राफ में समझा चुके हैं, जो हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा इसका सही ढंग से पालन किया गया है। आइए अब हम मामले के संदर्भ और उसके तथ्यों को देखें। आज, जब हम यह निर्णय दे रहे हैं तो दोनों अपीलार्थी पहले ही लगभग 10 वर्षों तक न्यायिक अधिकारियों के रूप में कार्य कर चुके हैं। इस बीच, उन्हें सिविल जज (वरिष्ठ प्रभाग) के अगले उच्च पद पर भी पदोन्नत किया गया है। उनके चयन और नियुक्ति की इस प्रक्रिया में (जिससे स्पष्ट रूप से उन्हें लाभ हुआ है), हमारे ध्यान में ऐसा कुछ भी नहीं लाया गया है जो इन नियुक्तियों को सुरक्षित करने में इन दोनों अपीलार्थियों के आचरण के बारे में किसी पक्षपात, भाई-भतीजावाद या तथाकथित दोष का संकेत दे। उच्च न्यायालय वास्तव में इस कारक को नोट करता है। राज्य आयोग पर दोष मढ़ते हुए यह दर्ज किया गया है कि "इस पर कुछ भी नहीं है। रिकॉर्ड इस तथ्य का संकेत देता है कि प्रतिवादी संख्या 4 और 6 " के चयन के पीछे कोई दुर्भावना थी।

33. दोनों अपीलार्थियों ने परीक्षा उत्तीर्ण की थी और योग्यता सूची में थे। सवाल यह है

कि क्या हमें उनकी नियुक्ति को रद्द कर देना चाहिए और उन्हें न्यायिक सेवा से हटा देना चाहिए। यही सवाल उच्च न्यायालय के समक्ष भी था और उसने दो कारणों से अपीलार्थियों की नियुक्ति का बचाव करने में असमर्थता व्यक्त की। पहला कारण यह था कि चूंकि उसने नियुक्ति में अवैधता का निष्कर्ष निर्धारित किया था, इसलिए उसे कठिनाई और समानता के आधार पर इन नियुक्तियों को जारी रखने का कोई कारण नहीं दिखाई दिया, क्योंकि यह केवल भारत के संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत ही किया जा सकता था और ये शक्तियां उच्च न्यायालय के पास नहीं थीं। दूसरा कारण यह दिया गया था कि किसी भी मामले में इक्विटी का संतुलन याचिकाकर्ता (यानी उच्च न्यायालय के समक्ष प्रतिवादी संख्या 4) के पक्ष में होगा, न कि वर्तमान अपीलार्थियों के। दिए गए कारण इस प्रकार थे:

“माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए उपरोक्त निर्णयों ध्यान दें से देखने के बाद, जिन्हें इस न्यायालय के ऊपर अन्यथा ध्यान में रखा गया है, यह पाया गया है कि हालांकि उपरोक्त मामलों में याचिकाकर्ताओं का चयन कानून के अनुसार नहीं माना गया था, लेकिन उनके चयन को भारत के संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत शक्ति का प्रयोग करते हुए माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संरक्षित किया गया था, जो शक्ति सबसे पहले इस न्यायालय के पास उपलब्ध नहीं है, और दूसरी बात यह है कि इस मामले में याचिकाकर्ताओं द्वारा 4 और 6 नंबर के प्रतिवादी के चयन को सक्रिय चुनौती दी गई है, जिनके अधिकार उपरोक्त प्रतिवादी के समान ही महत्वपूर्ण हैं और यदि उत्तरदाता संख्या 4 और 6 को अपने पदों पर बने रहने की अनुमति दी जाती है, इसका उल्लंघन होगा। तो याचिकाकर्ताओं का प्रश्नगत पदों के लिए चयन प्रक्रिया में भाग लेने/विचार किए जाने का अधिकार, और समानताओं को संतुलित करते हुए, जो पक्ष एक न्यायसंगत कारण के लिए लड़ रहा है, उसके अधिकार (एस. आई. सी. अधिकार) की रक्षा की जानी चाहिए न कि उस पक्ष की, जो चयन/नियुक्ति अधिकारियों द्वारा की गई अवैधता का लाभार्थी है।”

34. उच्च न्यायालय की दृष्टि में अपीलार्थी किसी भी न्यायसंगत राहत के हकदार नहीं थे क्योंकि वे चयन/नियुक्ति प्राधिकरण द्वारा की गई अवैधता के लाभार्थी थे। लेकिन फिर यह इस प्रश्न को आगे ले जाने में विफल रहा, जो हमारी राय में, उसे करना चाहिए था। उच्च न्यायालय ने कभी इसका जवाब नहीं दिया कि "अवैध" चयन और नियुक्ति का

कितना दोष उच्च न्यायालय (उसके प्रशासनिक पक्ष पर) पर होगा। निस्संदेह, रिक्तियों को समय पर भरने के सभी इरादों के साथ, उच्च न्यायालय अभी भी दोष से बच नहीं सकता है। चयन सूची प्रकाशित होने के बाद भविष्य में रिक्तियों को जोड़ने की शुरुआत से ही, उच्च न्यायालय चयन/नियुक्ति प्रक्रिया के लिए गोपनीय रहा है। तीन सदस्यीय समिति का निर्णय जिसमें उच्च न्यायालय के प्रतिनिधि शामिल थे (दिनांक 1) शुरू में रिक्तियों में चार और पद जोड़ने का निर्णय और यह तथ्य कि उच्च न्यायालय को कभी भी अतिरिक्त नियुक्तियों पर कोई आपत्ति नहीं थी, हालांकि ये नियुक्तियां उसकी निगरानी में की गई थीं, महत्वपूर्ण तथ्य हैं। इन नियुक्तियों के बाद, यह उच्च न्यायालय था जिसने इन अधिकारियों को भारत के संविधान के अनुच्छेद 235 के तहत राज्य के विभिन्न जिलों में तैनात किया था। इसके बाद इसने उन्हें न्यायिक अधिकारियों के रूप में प्रशिक्षित किया। हमारे सामने एक भी ध्यान दें, पत्र या किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं रखी गई है जो थोड़ा सा भी संकेत दे सके कि उच्च न्यायालय ने किसी भी समय इन नियुक्तियों पर आपत्ति जताई थी। रिट कार्यवाही में उच्च न्यायालय के समक्ष अतिरिक्त हलफनामों के रूप में पहली बार आपत्ति आई है जब इन दोनों नियुक्तियों की वैधता को चुनौती दी गई थी। उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ के समक्ष उच्च न्यायालय के महापंजीयक द्वारा दायर अतिरिक्त हलफनामे में कहा गया है कि ये नियुक्तियां उच्च न्यायालय के परामर्श से नहीं की गई थीं। हालांकि, कम से कम कहने के लिए, यह सही स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करता है। उच्च न्यायालय ने राज्य आयोग द्वारा किए गए पद चयन अभ्यास पर पूरा दोष लगाया है। यह सही स्थिति नहीं है, हालांकि निस्संदेह चयन प्राधिकरण के रूप में आयोग को अंततः इसका खामियाजा भुगतना होगा, फिर भी राज्य सरकार और उच्च न्यायालय द्वारा दोष समान रूप से साझा किया जाना चाहिए।

35. अपीलार्थियों और प्रतिवादी के अभिवचनों को देखने के बाद, हमारा विचार है कि अपीलार्थियों के चयन/नियुक्ति करने की प्रक्रिया का उल्लंघन हुआ है, जितना कि जिन रिक्तियों द्वारा अपीलार्थियों की नियुक्ति की गई थी, उनका कभी विज्ञापन नहीं किया गया था, और कड़ाई से कहें तो इन रिक्तियों को "प्रत्याशित रिक्तियों" के रूप में नहीं कहा जा सकता है क्योंकि ये रिक्तियां केवल 18.04.2013 द्वारा बनाई गई थीं, यानी चयन प्रक्रिया शुरू होने और 01.02.2013 द्वारा विज्ञापन जारी होने के बाद।

36. इस स्तर पर हमारे विचार के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि वर्तमान मामले में अपीलार्थी लगभग 10 वर्षों से न्यायिक अधिकारियों के रूप में काम कर रहे हैं। वे अब

सिविल जज (वरिष्ठ प्रभाग) हैं। इन न्यायिक अधिकारियों के पास अब 10 साल की न्यायिक सेवा का समृद्ध अनुभव है। इसलिए, वर्तमान अपीलार्थियों को उनके पदों से बर्खास्त करना जनहित में नहीं होगा। आम तौर पर, इन कारकों से कोई फर्क नहीं पड़ता, जैसा कि हमने ऊपर उल्लेख किया है, एक बार जब नियुक्ति को ही गलत माना जाता है। लेकिन हम इस बात पर भी विचार करने में विफल नहीं हो सकते कि अपीलकर्ताओं की नियुक्ति उन उम्मीदवारों की सूची से की गई थी जिन्होंने लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की थी और वे योग्यता सूची में थे। दूसरा, यह किसी का मामला नहीं है कि अपीलकर्ताओं को पक्षपात, भाई-भतीजावाद या किसी ऐसे कार्य के कारण नियुक्त किया गया है जिसे दूर से भी "निंदनीय" कहा जा सकता है। आखिरकार, वे अब दस साल से न्यायाधीश के रूप में काम कर रहे हैं। इसलिए एक विशेष इक्विटी है जो अपीलार्थियों के पक्ष में झुकती है। हाल ही में *इस न्यायालय की संविधान पीठ ने शिवानंदन सी. टी. और ओ. आर. एस. अन्य. केरल उच्च न्यायालय* और अन्य। (2023) एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 994 हालांकि इस न्यायालय द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि खेल के नियमों को केरल उच्च न्यायालय द्वारा वाइवा वॉस के लिए न्यूनतम अंक निर्धारित करके बदला गया था, अन्य नियमों में मौजूद नहीं थे और इसलिए संक्षेप में नियुक्ति स्वयं नियमों का उल्लंघन थी, फिर भी यह देखते हुए कि जिन व्यक्तियों ने इस चयन के तहत नियुक्तियां प्राप्त की थीं, वे अब 6 साल से अधिक समय से काम कर रहे हैं, यह माना गया कि उन्हें पद से हटाना सार्वजनिक हित में नहीं होगा। यह पैरा 58 में निम्नानुसार बताया गया था:-

“58. अब न्यायालय के समक्ष जो प्रश्न उठता है, वह याचिकाकर्ताओं को दी जा सकने वाली राहत के संबंध में है। सफल उम्मीदवारों की अंतिम सूची 6 मार्च 2017 को जारी की गई थी। जिन उम्मीदवारों का चयन किया गया है वे जिला और सत्र न्यायाधीशों के रूप में काम कर रहे हैं। लगभग छह साल। इस बीच, अदालत के समक्ष उपस्थित सभी याचिकाकर्ताओं ने न्यायिक कार्यालय में काम नहीं किया है। समय के इस अंतराल पर, अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले उम्मीदवारों को अयोग्य घोषित करना मुश्किल हो सकता है। इस स्तर पर उन्हें पद से हटाना जनहित के विपरीत होगा क्योंकि उन्होंने केरल राज्य की सेवा में न्यायिक अधिकारियों के रूप में अनुभव प्राप्त किया है। जबकि याचिकाकर्ताओं की शिकायत यह है कि यदि लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा में कुल अंकों को ध्यान में रखा

जाता है, तो वे तीन उम्मीदवारों से अधिक रैंक प्राप्त करेंगे जो इन कार्यवाही के लिए प्रतिवादी हैं, समान रूप से, हम इस तथ्य को नहीं भूल सकते हैं कि सभी चयनित उम्मीदवार अन्यथा न्यायिक पद के लिए योग्य हैं और लंबे समय से काम कर रहे हैं। उन्हें हटाने से, कठोर होने के अलावा, ऐसी स्थिति पैदा होगी जहां उच्च न्यायपालिका उन योग्य उम्मीदवारों की सेवाएं खो देगी जिन्होंने पिछले छह वर्षों में जिला न्यायाधीश के पद पर अनुभव प्राप्त किया है।”

और इसलिए, उक्त मामले में एक निर्देश इस प्रकार था:

‘60.XXX

XXX

(vi) राहत के संदर्भ में, हमारा मानना है कि छह साल से अधिक समय बीतने के बाद याचिकाकर्ताओं को उच्च न्यायिक सेवा में शामिल करने का निर्देश देना जनहित के विपरीत होगा। जिन उम्मीदवारों का चयन लगभग छह साल पहले किया गया है, उन्हें अयोग्य नहीं ठहराया जा सकता है। वे सभी योग्य थे और राज्य की जिला न्यायपालिका की सेवा कर रहे हैं। इस स्तर पर उन्हें हटाना जनहित के विपरीत होगा। याचिकाकर्ताओं को शामिल करना उन लोगों की वरीयता में नए उम्मीदवारों को लाना होगा जो लंबे समय तक न्यायिक पद पर हैं। राज्य और उसके नागरिकों को वरिष्ठ पद पर इन अनुभवी न्यायिक अधिकारियों के लाभ से वंचित करना जनहित में नहीं होगा।”

हाथ में मामला उपरोक्त मामले में याचिकाकर्ताओं से बेहतर नहीं तो एक समान आधार पर है।

37. इसलिए हम चयन की प्रक्रिया में त्रुटि के बारे में कानून पर उच्च न्यायालय के निष्कर्षों को बरकरार रखते हैं, जो परिणाम घोषित होने के बाद 8 अक्टूबर, 2013 के बाद हुई थी। फिर भी, ऊपर बताए गए कारणों से, पूर्ण न्यायाधीश आदेश और अनुच्छेद के तहत हमारी शक्तियों का प्रयोग आदेश के लिए 142 भारत के संविधान के अनुसार, हम उच्च न्यायालय के आदेश को दरकिनार करते हैं जहाँ तक कि यह अपीलार्थियों के चयन और नियुक्ति को रद्द करता है। उस हद तक, ये अपीलें सफल होती हैं और इसके लिए अनुमति दी जाती है।

38. चूंकि हमने कानून पर उच्च न्यायालय के निष्कर्षों को नहीं छुआ है और यह वास्तव में कानून की सही स्थिति थी, इसलिए 2023 की शेष दीवानी अपील संख्या 6237,2023 की 6235 और 2023 की 6236 (क्रमशः मीनाक्षी, परवेज और आशुतोष ठाकुर द्वारा दायर) को खारिज कर दिया जाता है।

39. हम यह भी स्पष्ट करते हैं कि अपीलकर्ता जिस वर्तमान मुकदमेबाजी से गुजरे हैं, वह इन न्यायिक अधिकारियों के न्यायिक जीवन के संबंध द्वारा किसी भी तरह से उनके रास्ते द्वारा नहीं आएगी। उन्हें उस वर्ष के लिए सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद पर अन्य नियुक्तियों के बराबर माना जाएगा। लंबित आवेदनों, यदि कोई हों, तो उस का भी निपटारा किया जाता है।

हेडनोट तैयारकर्ता:
अंकित ज्ञान

आपीलों का निपटारा किया गया।

प्रेम पाल रान्टा
(सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश)